"सुषमा मुनीन्द्र का कथा–साहित्यः संवेदना और शिल्प"

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)
की पी–एच.डी. (हिन्दी) की उपाधि हेतु प्रस्तावित रूपरेखा
सन् 2013

निर्देशिका

प्रो० (श्रीमती) शर्मिला सक्सेना
विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग)

शोधार्थिनी

कविता भदौरिया

संकाय प्रमुख

प्रो० उर्मिला आनन्द

कला संकाय
दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग, आगरा–282005

“सुषमा मुनीन्द्र के कथा–साहित्य : संवेदना और शिल्प”

भूमिका

हिन्दी कथा–साहित्य ने विश्वस्तरीय साहित्य में अपना सम्मानजनक स्थान बना लिया है। गद्य की सभी विधाओं की अपेक्षा कहानी और उपन्यास प्राचीनकाल से ही मानवीय विचारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ माध्यम रहे हैं। अपने आस–पास के जीवन घटनाओं और चरित्रों के निर्मित होने के कारण मुझे कथासाहित्य ने बाल्यकाल से ही प्रभावित किया।

वास्तव में उत्कृष्ट कथाकारों की स्वस्थ परम्परा में एक नया किन्तु प्रभावशाली नाम है ‘सुषमा मुनीन्द्र’। आप एक वरिष्ठ कहानीकार के रूप में जानी जाती है। आपका जन्म 5 अक्टूबर सन् 1959 में मध्यप्रदेश (रीवा) में हुआ। आपने बी.एस.सी. एवं एम.एस.सी. प्रथम वर्ष की शिक्षा बी.डी.सी. कॉलेज मध्य प्रदेश (रीवा) से प्राप्त की। आजकल आपका निवास सतना (म.प्र.) में है। आप 35–36 सालों से अपना अभूतपर्वू योगदान साहित्यिक क्षेत्र में दे रही हैं। सर्वप्रथम आपने कहानी से अपने लेखन का आरम्भ किया जो ‘घर’ शीर्षक से ‘सरिता’ में प्रकाशित हुई। आपका लेखन पारिवारिक, सामाजिक मूल्यों के विघटन, नारी विर्मश आदि को नई पहचान और आयाम देने में सफल भूमिका निभा रहा है।

लेखन क्षेत्र में आपका अभूतपूर्व योगदान है। आज तक आपके आठ कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। अभी तक आपका केवल एक उपन्यास ही प्रकाशित हुआ है। इससे स्पष्ट है कि आपकी रुचि कहानी लेखन में अधिक है।

भारतीय भाषाओं के साथ–साथ अंग्रेजी, ऊर्दू, कन्नड़ तमिल, तेलगू, मलयालम, मराठी पंजाबी, गुजराती आदि में भी आपकी कहानियाँ अनूदित हो रही हैं। आपके द्वारा रचित लघु उपन्यास ‘गृहस्थी’ का धारावाहिक के रूप में दूरदर्शन से प्रसारण हो चुका है। आपकी कहानी ‘गणित’ का राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय दिल्ली द्वारा मंचन तथा कहानी ‘दर्द ही जिसकी दांस्ता रही’ का नाट्य साहितय अकादमी उत्तर प्रदेशद्वारा लखनऊ में मंचन हो चुका है।

आपका लेखन उत्कृष्ट कोटि का है। आप द्वारा सृजित लगभग 328 कहानियाँ क्रमशः हंस, कथाक्रम, वार्गथ, वर्तमान साहित्य, कथादेश, वसुधा, समकालीन भारतीय साहित्य, इन्द्रप्रस्थ भारती, अक्षरा अक्षर पर्व, पाखी, शुक्रवार, द पब्लिक एजेंडा, सम्बोधन, इरावती, नई धारा, साहित्य अमृत आदि, राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है। आपके कथासाहित्य की अनुपम विशेषताओं को देखते हुये आपको विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जो इस प्रकार हैं–

1. मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी का 'सुभद्रा कुमारी चौहान' पुरस्कार।
2. निर्मल साहित्य पुरस्कार (म.प्र.)
3. कमलेश्वर कथा पुरस्कार (अलीगढ़)
4. प्रेमचन्द 'हंस' कथा सम्मान (दिल्ली)
5. हीरालाल शुक्ल पुरस्कार, जयपुर
6. राधेश्याम चित्तलांगिया पुरस्कार, लखनऊ
7. दिव्य रजत अलंकरणसागर (म.प्र.)
8. रत्नकांत साहित्य पुरस्कार सतना (म.प्र.)
9. विंध्य गौरव पुरस्कार, रीवा (म.प्र.) सहित कई क्षेत्रीय पुरस्कार तथा सम्मान आपको प्राप्त हुये हैं।

आपका व्यक्तित्व आपके द्वारा रचित साहित्य के माध्यम से स्पष्ट हो जाता है। आधुनिक लेखिकाओं में आपका अपना एक विशिष्ट स्थान है। आपका कथासाहित्य आज के मानव में व्याप्त पीड़ा एवं वेदना को उजागर करने में पूर्णरूपेण सक्षम है। आपके कथा साहित्य में समकालीन समाज पूर्णतः प्रतिबिम्बित हो रहा है।

आपके कथा–साहित्य के विषय में कहा जा सकता है कि आज जब स्त्रीवाद साहित्य का प्रमुख मुद्दा बना हुआ है, तब किसी वाद या विवाद में न पड़ते हुये "सुषमा मुनीन्द्र" ने आज जीवन को परिभाषित करती हुई कहानियाँ लिखीं हैं। आपके कहानी संग्रहों में भविष्य के बड़े–बड़े सपने दिखाने का दावा नहीं है, बल्कि यथार्थ का स्वाभाविक चित्रण, गहरी

चिंता, परिपक्व विजन के साथ हुआ है। यही कारण है इन संग्रहों की कहानियाँ आम जीवन का प्रतीक बन जाती हैं। रचनाकार के रूप में आपकी प्रत्येक रचना एक अलग विन्यास, गतिशीलता, जीवन ताप लिये हुये है।

आपके सम्पूर्ण कथा–साहित्य में आज के मानव की सोच को अभिव्यक्ति मिली है। आपके कथा–साहित्य के सभी पात्र अधिक सजग, सक्रिय और प्रभावी हैं। आपका कथा–साहित्य समाज में व्याप्त अनेक विसंगतियों को उजागर करने में सक्षम है। आपका कथा साहित्य समाज में व्याप्त संवेदनाओं को यथार्थ रूप से प्रस्तुत करता है। आपने कथावस्तु में मनुष्य–मनुष्य के सम्बन्धों के मोहक व स्थूल चित्र भी उकेरे हैं, जो कहीं भी भारतीय संस्कृति व मर्यादा का उल्लघंन करते नहीं दिखाई देते। आपकी भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण एवं सहज है तथा शैली मनोभावों के अनुरूप बदलती है। आपके साहित्य में इसके अतिरिक्त भी जीवन के विविध आयाम एवं दिशायें हैं, जो शोध की आवश्यकता रखती हैं।

विविध विश्वविद्यालयों के शोधपरक सूची पत्रों का अध्ययन करने पर मुझे ज्ञात हुआ कि 'सुषमा मुनीन्द्र' के कहानी साहित्य में संवेदना और शिल्प विषय पर अभी तक कोई शोधकार्य नहीं हुआ है। इसके अतिरिक्त मैंने स्वंय लेखिका से दूरभाष पर सम्पर्क कर उन पर हुये शोध कार्यों की जानकारी प्राप्त की जिससे ज्ञात हुआ कि इस विषय पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। अतः विषय तथा साहित्यकार की महत्ता को देखते हुये मुझे "सुषमा मुनीन्द्र का कथा–साहित्य : संवेदना और शिल्प" विषय पर शोध–प्रबन्ध प्रस्तुत करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। निःसन्देह इन रचनाओं के गहन अध्ययन से न केवल मेरे ज्ञान में वृद्धि होगी वरन् इस प्रबन्ध को पढ़ने से साहित्यिक विद्यार्थी लाभान्वित होंगे साथ ही साहित्य के क्षेत्र में मेरा यह एक लघु योगदान भी होगा।

सुषमा मुनीन्द्र पर अब तक दो लघु शोध कार्य हो चुके हैं उनके नाम हैं, 'अमृता जोशी' राजस्थान से 'समसामायिक हिन्दी कहानी में नई लेखिकाओं के अवदान का विश्लेषण' तथा 'सीतालक्ष्मी' हैदराबाद से उपन्यास 'छोटी सी आशा का समीक्षात्मक अध्ययन'।

अस्तु मुझे "सुषमा मुनीन्द्र का कथा–साहित्य : संवेदना और शिल्प" विषय पर शोधकार्य करने की अनुमति देकर अनुगृहीत करें जिससे मैं भी साहित्य के क्षेत्र में अपना योगदान दे सकूँ।

प्रस्तुतकर्त्री

कविता भदौरिया

"सुषमा मुनीन्द्र का कथा–साहित्य : संवेदना और शिल्प"

प्रथम अध्याय– सुषमा मुनीन्द्र का व्यक्तित्व और परिवेश

(क) व्यक्तित्व– जीवन परिचय, शिक्षा, पुरस्कार सम्मान आदि।

(ख) परिवेश – सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा साहित्यिक।

(ग) सुषमा मुनीन्द्र के रचना संसार पर परिवेश का प्रभाव।

द्वितीय अध्याय– सुषमा मुनीन्द्र का कथा–साहित्यः एक सर्वेक्षण

(क) कहानी के सैद्धान्तिक आधार का विकास

(ख) कृतित्व (कालक्रमानुसार विशेषताएँ)

तृतीय अध्याय– सुषमा मुनीन्द्र के कथा–साहित्य में व्यक्त संवेदना

(क) सुषमा मुनीन्द्र के कथा–साहित्य में व्यक्त संवेदना

1. सामाजिक पक्ष
2. राजनीतिक पक्ष
3. आर्थिक पक्ष
4. धार्मिक और नैतिक पक्ष
5. स्त्री–विर्मश
6. अन्य

(ख) **सुषमा मुनीन्द्र की कहानियों में चरित्र–चित्रण**

चतुर्थ अध्याय– सुषमा मुनीन्द्र के कथा साहित्य में भाषा एवं शिल्प

(क) भाषागत वैशिष्ट्य

(ख) शिल्पगत वैशिष्ट्य

पंचम अध्याय– समकालीन प्रमुख महिला कथाकार और सुषमा मुनीन्द्र

उपसंहार

परिशिष्ट

1. सुषमा मुनीन्द्र से साक्षात्कार
2. आधार ग्रन्थों की तालिका
3. सन्दर्भ ग्रन्थों की तालिका
4. पत्र–पत्रिकाओं की सूची
5. साहित्य कोश, विश्व कोश
6. इन्टरनेट विवरण आदि

ग्रन्थानुक्रमाणिका

अ. आधार ग्रन्थ

कहानी संग्रह	लेखक का नाम	प्रकाशन	सन्
मेरी बिटिया	सुषमा मुनीन्द्र	दुर्ग प्रकाशन, म.प्र.	1997
नुक्कड़ नाटक	सुषमा मुनीन्द्र	दुर्ग प्रकाशन,	2000
महिमा–मण्डित	सुषमा मुनीन्द्र	दुर्ग प्रकाशन	2000
मृत्यु–गंध	सुषमा मुनीन्द्र	दुर्ग प्रकाशन,	2004
अस्तित्व	सुषमा मुनीन्द्र	दुर्ग प्रकाशन,	2006
अन्तिम प्रहर का स्वप्न	सुषमा मुनीन्द्र	दुर्ग प्रकाशन,	2008
ऑन लाइन रोमांस	सुषमा मुनीन्द्र	सामयिक प्रकाशन	2010
अपना ख्याल रखना	सुषमा मुनीन्द्र	सामयिक प्रकाशन	2012
दो कहानी संग्रह प्रेस में है।			

सन्दर्भ ग्रन्थ

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन	सन्
नई कहानी की भूमिका	कमलेश्वर	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2009
हिन्दी कहानी का रचना शास्त्र	डॉ. धनंजय वर्मा,	प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली	1948
बीसवीं सदी के अन्त में हिन्दी कहानी	नीरज खरे	क्लासिक पब्लिशिंग कम्पनी कर्मपुरा	2004
समकालीन कहानी : रचना मुद्रा	पुष्पपाल सिंह	राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली	1986
कहानी की समाजशास्त्रीय समीक्षा	रमेश उपाध्याय	नमन प्रकाशन, दिल्ली	1999
हिन्दी की राजनैतिक व्यंग्य कहानियाँ : एक अध्ययन	पी.आर. डोडिया	सुरभि पब्लिकेशन, गुजरात	2007
हिन्दी कहानी का सफरनामा	धनंजय वर्मा	प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली	2001

हिन्दी साहित्य का इतिहास	बाबू गुलाबराय	कानपुर	53वां संस्करण
हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा	डॉ. राजकुमार उपाध्याय मणि	कला प्रकाशन वाराणसी	2009
हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास भाग, 1,2	डॉ. गणपति चन्द्र गुप्ता	लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद	1980
आधुनिक हिन्दी कहानी में वर्णित सामाजिक यथार्थ	डॉ. ज्ञानचन्द्र शर्मा	राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली	1996
आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में प्रगति चेतना	डॉ. लक्ष्मण दत्त गौतम	कोणार्क प्रकाशन नई दिल्ली	1972
समकालीन हिन्दी कहानी और समाजवादी चेतना	डॉ. किरण बाला	अनुभव प्रकाशन, कानपुर	1988
समकालीन हिन्दी कहानी	डॉ. मिनाक्षी पहवा	पब्लिकेशन, नई दिल्ली	2008
स्वतन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में विचार तत्व	सरोज गुप्ता	भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली	1999